ग्रामीण क्षेत्रों में समुदाय-समर्थित अधिगम

टुलटुल बिस्वास

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा घोषित महामारी कोविड-19 दुनिया को हमेशा के लिए बदल सकती है। इसने ज़िंदगियाँ तबाह कर दी हैं, बाज़ारों को अस्त-व्यस्त कर दिया है, हमारे सामाजिक ताने-बाने को चुनौती दी है और अभी इसके दीर्घकालिक प्रभावों को देखना बाक़ी है। इसने दुनिया भर में शिक्षा की औपचारिक गतिविधियों को पूरी तरह से रोक दिया है। बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे, वे अपनी कक्षाओं में भाग लेने, अपने साथियों के साथ बातचीत करने और औपचारिक शैक्षिक गतिविधियों के साथ जुड़ने में असमर्थ हैं।

पृष्ठभूमि

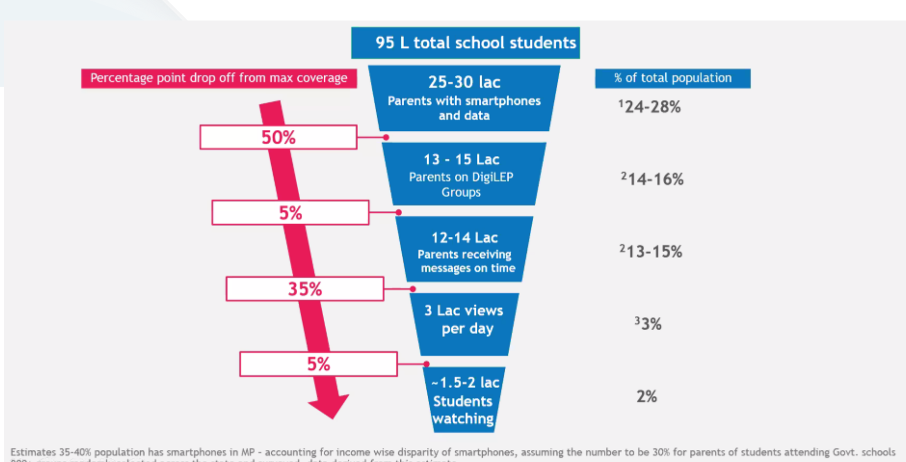
सरकारी स्कूल जाने वाले बच्चों को दोहरा नुकसान हो रहा है। एक तो उन्हें दोपहर का भोजन (मिड-डे मील) नहीं मिल पा रहा है, जो उनके लिए कम-से-कम एक वक्त का गर्म भोजन था और दूसरे वे लम्बे समय से किसी भी प्रकार के औपचारिक शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में भाग नहीं ले पा रहे। आँगनवाड़ियों के बन्द होने के कारण बच्चों के टीकाकरण में भी बाधा पहुँची है। स्कूलों के खुलने के बाद शायद हमारे सामने ऐसे बच्चे होंगे जिनकी प्रतिरक्षा क्षमता कमज़ोर होगी, पोषण में कमी आई होगी और औपचारिक अधिगम में अन्तराल आया होगा।

लॉकडाउन के शुरुआती कुछ दिनों या हफ़्तों में, माता-पिता, परिवार, समुदाय और यहाँ तक कि सभी परोपकारी संगठन भी आजीविका के साधन छिन जाने की तात्कालिकता और डर तथा अगले वक़्त के भोजन की चिन्ता से विह्वल थे। भारत के लाखों लोगों के सामने भोजन जुटाने के संघर्ष के अलावा यह चुनौती भी थी कि वे अपने लिए अचानक अनजान और अ-मित्रवत हो गए मेट्रो शहरों से, अपने सुदूर गाँव या घर तक कैसे पहुँचें। बच्चों और स्कूली शिक्षा को तो काफ़ी हद तक भुला ही दिया गया था।

फिर जैसे-जैसे महीने बीतते गए और गर्मियों की छुट्टियाँ ख़त्म होने को आईं, लेकिन महामारी रूपी सुरंग के ख़त्म होने के कोई आसार नहीं नज़र आए तो घबराहट बढ़ने लगी। निजी शिक्षण संस्थानों ने ई-लर्निंग पर विचार करना शुरू कर दिया और तब से अधिकांश महँगे व मध्यम दर्जे के निजी स्कूल नियमित रूप से ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित कर रहे हैं। इसने देश के सम्पन्न और असम्पन्न लोगों को और अधिक विभाजित कर दिया है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। गाँवों में ई-लर्निंग के लिए बुनियादी ढाँचे की कमी और अपने स्वयं के घरों में कहीं अधिक अभाव ने सरकारी स्कूलों में जाने वाले और पहले से ही हाशिए पर रहने वाले बच्चों को शिक्षा से और भी वंचित कर दिया है।

राज्य शिक्षा केन्द्र, मप्र और सस्टेनेबल एक्शन फॉर ट्रांसफॉर्मिंग ह्यूमन कैपिटल (SATH), जो नीति आयोग द्वारा मध्यप्रदेश में डिजिटल शिक्षा का समर्थन करने वाली पहल है, द्वारा साझा किए गए डेटा से पता चलता है कि डिजिटल माध्यम से सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों तक पहुँचने की स्थिति कितनी

कई स्तरों पर अच्छे प्रयासों के बावजूद, हम अभी भी राज्य के कुल विद्यार्थियों में से केवल 2% विद्यार्थियों तक पहुँच पाए हैं।



निराशाजनक है। इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि सरकारी स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों में लगभग 30 प्रतिशत के पास ही अपने ख़ुद के स्मार्टफ़ोन हैं। इसके अलावा डिजिटल लर्निंग एनहांसमेंट प्रोग्राम (डिजिएलईपी) के माध्यम से भेजी जाने वाली सामग्री की वास्तविक पहुँच/उपयोग सरकारी स्कूल के कुल विद्यार्थियों की संख्या का केवल दो प्रतिशत के लगभग है।

इसमें अगर ऐसे अभिभावकों और अन्य वयस्कों की वह बड़ी संख्या जोड़ दी जाए जो अधिगम की डिजिटल प्रक्रियाओं में अपने बच्चों की सहायता करने में अक्षम है तो सरकारी स्कूल के वंचित विद्यार्थियों की संख्या बहुत बढ़ जाएगी।

प्रत्येक पड़ोस को एक विद्यालय बनाना

लेकिन अब शोक करने का समय समाप्त हो गया है। अब तो यह बात महत्त्वपूर्ण है कि हम इस चुनौती को दूर करने के लिए अभिनव तरीक़े खोजें।

एकलव्य की टीमें मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में 60,000 से अधिक बच्चों और सरकारी स्कूलों के लगभग 2000 शिक्षकों के साथ काम करती हैं। इन्हें भी अचानक विद्यार्थियों तक न पहुँच पाने की चुनौती का सामना करना पड़ा। गर्मियों के महीनों में हमारी टीमें आमतौर पर बहुत-सी गतिविधियाँ करवाने में व्यस्त रहती हैं जैसे विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए ग्रीष्मकालीन कैम्प शिक्षकों और गाँवों के उन युवाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाएँ जो हमारी शैक्षिक पहल का समर्थन कर रहे हैं आदि। टीमों ने मई 2020 में ही शिक्षकों के साथ बातचीत शुरू कर दी थी, यहाँ तक कि लॉकडाउन के समय भी यह कार्य चल रहा था। इन अन्तःक्रियाओं को ज़्यादातर उन चुनौतियों के इर्दगिर्द बनाया गया था जिनका सामना शिक्षक उन्हें सौंपी गई कोविड ड्यूटी को करते समय कर रहे थे। साथ ही इस चुनौतीपूर्ण समय में, सीखने की उनकी अपनी ज़रूरतें भी थीं। इन अन्तःक्रियाओं से हमारे सामने जो चित्र उभरे वे काफ़ी मिलते-जुलते और निराशाजनक थे क्योंकि अधिकांश शिक्षकों को यह कार्य सौंपा गया था कि वे अपने विद्यार्थियों के डिजिटल अधिगम को सुनिश्चित करें, लेकिन वे सेल फ़ोन के माध्यम से उनके साथ जुड़ने की कोशिश में सफल नहीं हो पा रहे थे और काफ़ी निराश थे।

सरकारी स्कूल के शिक्षकों के साथ हुए सम्पर्क और *राज्य शिक्षा केन्द्र* के साथ हुए संवाद ने हमारा ध्यान उस वृहद् डिजिटल विभाजन की ओर खींचा, जिसका हम अनुभव कर रहे हैं और इस बात पर पुनः ज़ोर दिया कि बच्चों को आमने-सामने बैठकर शिक्षा देने की आवश्यकता है। राज्य स्तर पर बैठकों की एक शृंखला में, *राज्य शिक्षा केन्द्र* की टीम ने शिक्षा में कार्यरत ग़ैर-सरकारी संगठनों को आमंत्रित किया और उनके साथ मिलकर, *हमारा घर - हमारा विद्यालय* (HGHV) नामक एक अभियान चलाया। इसमें शिक्षक अपने आस-पड़ोस का दौरा करते और बच्चों के लिए औपचारिक स्कूली गतिविधियों को आगे ले जाने में माता-पिता के साथ काम करते।

HGHV अभियान के तहत मोहल्ला या पड़ोस की कक्षाओं का विचार सामने आया – यह एक ऐसा विचार था जिसे एकलव्य ने पहले ही अपने कुछ क्षेत्रों में सफलतापूर्वक चलाया था और इसलिए उसकी ज़ोरदार वकालत की।

अनुभवों के आधार पर कार्य को आगे बढ़ाना

शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र (एसपीके) समुदाय आधारित शिक्षण केन्द्र हैं। ये सबसे अधिक हाशिए पर रहने वाले, पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वाले बच्चों को औपचारिक शिक्षा देते हैं और उन्हें वह शैक्षिक सहायता प्रदान करते हैं जो मुख्यधारा के स्कूलों में बने रहने के लिए आवश्यक है। एसपीके ऐसे मॉडल हैं जो सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में मज़दूरी करने वाले, भूमिहीन खेतिहर मज़दूर, *दलित* और *आदिवासी* परिवारों के बच्चों को सार्थक रूप से सीखने का अवसर देते हैं। चूँकि शिक्षा केवल स्कूली शिक्षा का परिणाम नहीं है, इसमें घर, माता-पिता, भाई-बहन और पड़ोस के समर्थन का बहुत महत्त्व होता है, इसलिए एसपीके उन जगहों पर समुदाय-आधारित विकास करने का काम करता है जहाँ बच्चों को घर से समर्थन नहीं मिलता।

एसपीके का दूसरा और दीर्घकालिक उद्देश्य यह है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के साथ-साथ सरकारी स्कूलों के समग्र कामकाज को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया जाए। इसके लिए गाँव के एसपीके तथा सरकारी स्कूल के स्थानीय शिक्षकों के बीच एक सक्रिय और सहयोगपूर्ण सम्बन्ध को बढ़ावा दिया जाता है।

एसपीके को चलाने के लिए अभिभावकों की समिति का गठन किया जाता है। समिति गाँव के एक स्थानीय युवा का चयन करती है। यह युवा सुगमकर्ता एसपीके में नियमित दो घण्टे शिक्षण-अधिगम कार्य करता है। एसपीके का सामुदायिक स्वामित्व शुरू से ही निर्मित कर दिया जाता है और प्रत्येक एसपीके केन्द्र में अभिभावकों के साथ मासिक बैठकें आयोजित की जाती हैं। एसपीके में आने वाले बच्चों के अभिभावक इसमें शामिल होते हैं और इन मुद्दों पर चर्चा करते हैं - अपने बच्चे की मासिक शैक्षिक प्रगति, कुछ बच्चों की अनियमितता या देर से आने के कारण, बच्चे की शिक्षा में अभिभावकों की सहायता की भूमिका, मासिक बैठकों में अभिभावकों की उपस्थिति, गाँव के स्कूल और स्कूल के शिक्षकों की कार्यप्रणाली, बच्चों के अधिगम में कहानियों और कहानियों की किताबों का स्थान आदि।

मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर

जैसा कि स्वास्थ्य और सुरक्षा उपायों का पूर्वानुमान है कि 2020-21 के शैक्षिक सत्र में भी स्कूल काफ़ी लम्बे समय बन्द रह सकते हैं और बच्चों के एकत्रीकरण और सामूहिक गतिविधियों की अनुमति तो बिलकुल नहीं दी जा सकती। अतः *एकलव्य* में हमने पड़ोस की स्कूली शिक्षा प्रणाली को अपनाने का फ़ैसला किया और एसपीके को और अधिक विकेन्द्रीकृत करके उसे प्रत्येक ऐसे इलाक़े/बस्ती तक ले गए जहाँ बच्चे रहते हैं।

इस प्रकार *मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर (मोहल्ला एलएसी)* का विचार उभरा, जो बच्चे के बिलकुल आस-पास के क्षेत्र में सीखने की एक ऐसी आरामदायक जगह है, जहाँ बच्चे अधिगम के सार्थक और आनन्दपूर्ण अनुभवों के साथ जुड़ाव जारी रख सकें और ऐसा करने में उन्हें अपने से बड़े भाई-बहन, स्थानीय युवा या माता-पिता की मदद मिल सके।

मोहल्ला एलएसी को पड़ोस या गाँव के भीतर खुले या हवादार स्थानों में आयोजित किया जाता है, जिसमें प्राथमिक स्कूल स्तर के अधिकतम पन्द्रह बच्चों को शामिल होने के लिए बुलाया जाता है। अगर संख्या अधिक हो तो एलएसी द्वारा अधिक बैच बनाए जाते हैं जिससे कि उचित शारीरिक दूरी और अन्य सुरक्षा सावधानियों को सुनिश्चित किया जा सके। *मोहल्ला* एलएसी सोमवार से शुक्रवार तक प्रतिदिन दो घण्टे कार्य करता है। शनिवार को योजना बनाने, पिछले सप्ताह की समीक्षा करने और सुगमकर्ताओं के क्षमता-निर्माण सम्बन्धी गतिविधियाँ की जाती हैं।

शुरुआती निवेश के रूप में जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है, वे इस प्रकार हैं - एक छोटी-सी चलती-फिरती लाइब्रेरी (सुगमकर्ता के लिए पुस्तकों का एक सेट जिसकी सहायता से वे बच्चों को पढ़ने के अवसर दे सकें), कुछ आवश्यक शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का एक सेट और न्यूनतम स्टेशनरी। उद्देश्य यही है कि सुगमकर्ता को शिक्षण-अधिगम सामग्री के रूप में रोज़मर्रा की सामग्रियों का उपयोग करने में सक्षम किया जाए ताकि बाहरी टीएलएम पर निर्भरता कम-से-कम हो और पर्यावरण से 'कर के सीखने' तथा एक-दूसरे से सीखने के विचारों को बढ़ावा मिले।

हम मध्यप्रदेश में लगभग 430 और महाराष्ट्र में लगभग 40 मोहल्ला एलएसी चला रहे हैं। इनसे प्राप्त अनुभव हमें बताते हैं कि सबसे महत्त्वपूर्ण और तात्कालिक आवश्यकता यह है बच्चों को घरों से बाहर निकलने, अपने साथियों से मिलने और लम्बे समय से वे जिस तनाव से गुज़र रहे हैं, उससे निपटने में उनकी मदद की जाए।



शाहपुर, बैतूल जिला, मध्य प्रदेश



शाहपुर, बैतूल जिला, मध्य प्रदेश



सांगाखेड़ा, होशंगाबाद जिला, मध्य प्रदेश



खेड़ला, होशंगाबाद जिला, मध्य प्रदेश



शाहपुर, बैतूल जिला, मध्य प्रदेश

जो बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं, वे सामाजिक-आर्थिक रूप से हाशियाकृत परिवारों से आते हैं। इन परिवारों में कई महीनों से बहुत अधिक तनाव है - घरों में दमघोंटू और अवसादक परिस्थितियाँ हैं। मोहल्ला एलएसी में बच्चों को घर की इन तनावपूर्ण स्थितियों से दूर रहने, साथियों से मिलने, लॉकडाउन सहित अन्य बातों के अपने अनुभवों के बारे में बातचीत करने, लिखने और चित्र बनाने आदि के अवसर मिलते हैं। चूँकि यह गतिविधियाँ पड़ोस में आयोजित की जाती हैं, इसलिए माता-पिता अक्सर यह देखने आ जाते हैं कि बच्चे इन मोहल्ला कक्षाओं में क्या कर रहे हैं! वे अपने बच्चों को मज़ेदार गतिविधियों में लिप्त पाते हैं, जो बुनियादी पढ़ने-लिखने और संख्या-ज्ञान से सम्बन्धित होती हैं।

चूँकि राज्य शिक्षा केन्द्र ने भी मोहल्ला कक्षाओं के विचार को स्वीकार किया है, इसलिए कई गाँवों के शिक्षक इनका समर्थन करने के लिए आगे आए हैं और सरकारी स्कूल के शिक्षकों और स्थानीय युवाओं के बीच एक तालमेल विकसित किया जा रहा है।

पथप्रदर्शक के रूप में बच्चे

कक्षाओं में शुरू से ही कुछ सर्वोत्तम एहतियाती तरीक़ों का पालन किया जा रहा है जिससे बच्चों में व्यवहार-परिवर्तन हो सकता है। कुछ उल्लेखनीय परिवर्तन इस प्रकार हैं :

- चूँकि छोटे, बन्द स्थान वायरस के तेज़ी से पनपने के लिए मुफ़ीद होते हैं, इसलिए *मोहल्ला* एलएसी को खुले स्थानों या अच्छी तरह से हवादार कमरों में आयोजित किया जाता है।
- सभी विद्यार्थियों और सुगमकर्ताओं के लिए मास्क पहनना अनिवार्य है।
- प्रत्येक मोहल्ला एलएसी में साबुन, साफ़ पानी और साफ़ सूती तौलिए प्रदान किए जाते हैं और हर कोई कक्षा में प्रवेश करने और बाहर जाने पर 20-30 सेकंड तक हाथ धोता है।
- सभी गतिविधियों के दौरान शारीरिक दूरी को बनाए रखा जाता है।

रोज़ इन प्रक्रियाओं का अभ्यास करते-करते यह बच्चे अब अपने घरों में भी बदलाव के दूत बन गए हैं।

समुदाय के साथ जुड़ाव

यह बात तो सभी जानते हैं कि अभिभावक और समुदाय अपने बच्चों की शिक्षा में एक बड़ी और महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान परिदृश्य में हमें यह सच्चाई और भी अधिक स्पष्ट रूप से महसूस होती है। अब समय आ गया है कि हम अधिगम को स्कूल की इमारत और निर्दिष्ट विषयों से परे जाकर देखें, भले ही स्कूल जैसी औपचारिक संरचना उपस्थित हो या न हो। शिक्षा के क्षेत्र में एकलव्य के सभी कार्यों का केन्द्रीय विचार यही रहा है कि शैक्षिक प्रक्रियाओं में सामुदायिक जुड़ाव का बहुत महत्त्व होता है। हमें इसका दीर्घकालीन अनुभव भी है, इसलिए हम कोविड के दौरान उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार थे और मौजूदा परिस्थिति के साथ सामंजस्य स्थापित कर पाए तथा हमने मोहल्ला एलएसी के विचार को लागू किया।

मोहल्ला एलएसी के संचालन के लिए गठित अभिभावकों की समितियों और स्थानीय स्कूल के शिक्षकों के साथ बातचीत करके इन सामुदायिक निकायों को अब मोहल्ला एलएसी के दिन-प्रतिदिन के कामकाज की समीक्षा करने की ज़िम्मेदारी सौंपी जा रही है। जो प्रवासी परिवार वापस लौट रहे हैं, उनमें सबसे अधिक हाशिए पर रहने वाले बच्चों को मोहल्ला एलएसी में लाने और बाद में उन्हें स्थानीय गाँव के स्कूलों में दाख़िला दिलाने के लिए भी जागरूकता फैलाई जा रही है।

यह सामुदायिक फोरम कोविड से सम्बन्धित सूचनाओं को साझा करने का मंच बन गए हैं, जिसमें वायरस को दूर रखने के तरीक़ों और विभिन्न सावधानियाँ बरतने के औचित्य के बारे में बताया जा रहा है।

समुदाय में शिक्षा से सम्बन्धित अन्य सन्देशों का आदान-प्रदान किया जाता है, जैसे कि घर पर ऐसी गतिविधियाँ करवाना जिन्हें बच्चे, माता-पिता के थोड़े से मार्गदर्शन के साथ कर सकें, बच्चों के लिए नियत दैनिक कार्यक्रम या दिनचर्या बनाना बावजूद इसके कि स्कूल नहीं खुले हैं और घर में, चाहे फिर वह एक झोंपड़ी ही क्यूँ न हो बच्चों की पढ़ाई के लिए एक छोटा कोना स्थापित करना।

हितकारी परिणाम

इस सबके परिणाम इस प्रकार हैं :

- अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा के साथ ज़्यादा जुड़ रहे हैं, घरों को सकारात्मक जुड़ाव का स्थान बना रहे हैं



वाजवणे, खेड़, पुणे जिला, महाराष्ट्र

तथा बचपन और अधिगम के अनुभव को पुनः जी रहे हैं।

- एक युवा सामुदायिक वर्ग का निर्माण हुआ है जो स्वेच्छा से बच्चों के अधिगम में मदद करने के लिए समय देते हैं और ग्राम-स्तरीय अधिगम केन्द्रों, माता-पिता और शिक्षकों के साथ बैठक आयोजित करते हैं। साथ ही इन सबके साथ मिलकर गाँव में ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित कर रहे हैं कि आस-पड़ोस का प्रत्येक घर एक स्कूल बन सके।

चूँकि स्कूल लम्बे समय तक बन्द रहने वाले हैं, इसलिए *मोहल्ला* एलएसी प्रयास ने एक नए सामाजिक बुनियादी ढाँचे का निर्माण किया है, जिसमें शिक्षक-समुदाय जुड़ाव सन्निहित है। इसने न केवल प्राथमिक विद्यार्थियों के अधिगम को सुनिश्चित करने के लिए, बल्कि महामारी के खिलाफ़ सुरक्षात्मक उपायों को सीखने और अपनाने एवं आस-पड़ोस, गाँव-टोलों को मज़बूती प्रदान करने के लिए समुदायों को मिल कर काम करने का एक मंच प्रदान किया है।

शहरी स्थितियों के विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों में कोविड के मामले कम होते हैं, जनसंख्या घनत्व कम होता है, बस्तियाँ छितरी हुई होती हैं और संक्रमण भी काफ़ी कम फैलता है। इसलिए गाँवों का सामाजिक बुलबुला इस बात के अवसर प्रदान करता है कि समुदाय के नेतृत्व वाले शिक्षा-दृष्टिकोण को अपनाकर, स्कूलों के बन्द होने से बच्चों पर पड़ रहे नकारात्मक प्रभाव को कम किया जा सके। अब शहरी केन्द्रों को गाँवों के उदाहरण पर ध्यान देना चाहिए और उससे सीख लेनी चाहिए।

फोटो साभार : अमरवती, अंकित लिल्हारे, आकाश, नन्दा, खेमप्रकाश, सरिता अभंग



टुलटुल बिस्वास एकलव्य के शिक्षक शिक्षा, आउटरीच और एडवोकेसी कार्यक्रम का समन्वय करती हैं। वे उस टीम के साथ कार्यरत हैं जो शिक्षकों और ज़मीनी स्तर के शिक्षा कार्यकर्ताओं के लिए अधिगम के अवसरों, कार्यशालाओं, लघु पाठ्यक्रम को डिज़ाइन करती है और कक्षा-अभ्यासों में परिवर्तन लाने का प्रयास करती है। टुलटुल ने रसायन विज्ञान और समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। लगभग तीन दशक से एकलव्य में हैं। इसके पहले वे संस्था की बाल विज्ञान पत्रिका, चकमक की सम्पादकीय टीम की सदस्य थीं। उन्हें लोक और शास्त्रीय संगीत में गहरी रुचि है। उनसे **tultulbiswas@yahoo.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल